

प्रदेश में मतदाता सूची के
स्पेशल समरी रिवीजन (SSR)
का कैलेंडर जारी

निर्धारित समय-सारणी

08.11.2024

महान क्रांति का प्रतिष्ठान

12.11.2024

महान युद्ध के सभा स्थान की स्मृति

17.11.2024

कोई सरकारी कार्य नहीं होना चाहिए

25.11.2024

कोई सरकारी कार्य नहीं होना चाहिए

04.01.2025

महान युद्ध का प्रतिष्ठान

समय पर अपनी उपस्थिति जांचें और
मतदाता सूची में अपना नाम सुनिश्चित करें।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी तथा प्रदेश द्वारा निर्धारित में जारी



भोपाल में बादलों का डेरा

सांध्यप्रकाश विशेष

यूएई में भारतीय पायलट कैप्टन
स्मित मच्छर का सम्मान

राष्ट्रपति ने गले लगाया, दिया
‘फर्स्ट-क्लास ऑर्डर ऑफ जायद II’

दुबई, सांध्यप्रकाश। भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मच्छर को विमान में यात्रियों की जान बचाने और संकट के दौरान साहस दिखाने के लिए संयुक्त अरब अमोरात (यूएई) में सम्मानित किया गया। यूएई के राष्ट्रपति शेख सम्मान प्रदान किया। यूएई के नेताओं ने कैप्टन स्मित मच्छर और उनकी टीम के साहस, पेशेवर कौशल और यात्रियों की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना की।

को-पायलट ने कुल्हाड़ी से किया था हमला

यह घटना 30 सितंबर को हुई थी, जब फ्लाईडुबई की फ्लाइट एफजेड 1073 दुबई से तेल अवीव जा रही थी। विमान के कॉकपिट में को-पायलट ने कैप्टन स्मित मच्छर पर इमरजेंसी कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। इस हमले में कैप्टन गंभीर रूप से घायल हो गए। हमले के बावजूद कैप्टन स्मित मच्छर ने

मोहम्मद बिन जायेद अल नाह्यान ने फ्लाईदुबई के पायलट और विमान के अन्य कर्मी सदस्यों को ‘फर्स्ट-क्लास ऑर्डर ऑफ जायद II’ से सम्मानित किया। यह सम्मान 30 सितंबर को फ्लाइट एफजेड 1073 में हुई गंभीर घटना के दौरान उनकी बहादुरी और जिम्मेदारी के लिए दिया गया।

सम्मान समारोह में यूएई के राष्ट्रपति ने फ्लाइट के कर्मी सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान यूएई के उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मक्तूम भी मौजूद रहे। दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हम्दान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मक्तूम ने कर्मी सदस्यों को



अर्बन ग्रोथ कॉन्क्लेव 2026 का शुभारंभ

2047 तक विकसित मध्यप्रदेश बनाने पर जोर: मोहन यादव

इंदौर, सांध्यप्रकाश। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में मध्यप्रदेश अर्बन ग्रोथ कॉन्क्लेव 2026 का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। कॉन्क्लेव में प्रदेश के शहरी विकास, आधुनिक अधोसंरचना, नागरिक सुविधाओं और पर्यावरण के अनुकूल शहरों के निर्माण से जुड़े विषयों पर चर्चा की जा रही है। इस अवसर पर नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट, महापौर पुष्पमित्र भार्गव, एसीएस संजय दुबे, नगरीय प्रशासन आयुक्त संकेत भोंडवे प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सरकार ने विकसित मध्यप्रदेश 2047 के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शहरी विकास को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। कॉन्क्लेव के शुभारंभ से पहले मुख्यमंत्री डॉ.

मोहन यादव ने ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में स्थापित अर्बन इन्वेषन गैलरी का अवलोकन किया। यहां उन्होंने शहरी विकास और नवाचार से जुड़े प्रयासों को देखा। आयोजन में शहरों की बदलती जरूरतों के अनुरूप बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने और आधुनिक शहरी व्यवस्थाएं विकसित करने पर जोर दिया गया।

आधुनिक और हरित शहरों पर सरकार का फोकस- मुख्यमंत्री ने विकसित मध्यप्रदेश 2047 के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए आधुनिक और हरित शहरों की अवधारणा के साथ आगे बढ़ने की बात कही। सरकार का जोर ऐसी शहरी अधोसंरचना विकसित करने पर है, जो नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास की जरूरतों को भी पूरा करे।

शहरी विकास के सामने बड़ी चुनौती- मध्यप्रदेश में शहरीकरण के विस्तार के साथ आवास, यातायात, पेयजल, सौज्य प्रबंधन, कचरा निपटान

और हरित क्षेत्रों के संरक्षण जैसे चुनौतियां भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। ऐसे में अर्बन ग्रोथ कॉन्क्लेव की अहमियत केवल आधुनिक शहरों की अवधारणा पर चर्चा तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक महत्व इस बात से तय होगा कि यहां सामने आने वाले विचारों और प्रस्तावों को शहरों में किस तरह लागू किया जाता है और आम नागरिकों को उनका कितना लाभ मिलता है। विकसित मध्यप्रदेश 2047 की परिकल्पना को जमीन पर उतारने के लिए शहरी विकास के साथ पर्यावरणीय संतुलन, प्रभावों नगर निकायों और बुनियादी सेवाओं को उपलब्धता पर भी ध्यान देना होगा।

- विस्तृत फोटो पेज 7 पर देखें

मुख्यमंत्री ने किया काले हिरणों के रेस्क्यू का निरीक्षण



हमारा लक्ष्य वन्यजीवों और फसलों की सुरक्षा पकड़े गए 1236 कृष्णमृग छोड़े जाएंगे अलग-अलग जंगलों में

भोपाल/शाजापुर। सांध्यप्रकाश। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज शाजापुर जिले के रंधभंवर गांव पहुंचे। यहां उन्होंने कृष्णमृगों को पकड़कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के अभियान के दूसरे चरण का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने वन विभाग-प्रशासनिक अधिकारियों से अभियान की प्रगति और व्यवस्थाओं की जानकारी ली। साथ ही, कैमोफलाज्ड मचान से बोमा पद्धति से किए जा रहे कृष्णमृग रेस्क्यू कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने बोमा स्थल पर वन विभाग-प्रशासनिक टीम के साथ ग्रुप फोटो भी खिंचवाया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मीडिया से कहा कि किसान कल्याण वर्ष पूरे प्रदेश में मनाया जा रहा है। ऐसे में हमारे किसानों की फसलों को जंगली जानवरों, खासकर काले हिरण और नीलागाय से बचाने के लिए सरकार द्वारा अफ्रीका से एक विशेष टीम बुलाई गई है। इस टीम की मदद से काले हिरणों को न केवल सुरक्षित रूप से पकड़कर पिंजरों में रखा जाता है, बल्कि इस बात का भी विशेष ध्यान रखा



जाता है कि किसी भी जानवर को चोट न पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मुझे इस बात का संतोष है कि पूरे दिक्कत एंशिया में पहली बार हेलीकॉप्टर की मदद से बोमा पद्धति के आधार पर वन्यजीवों के रेस्क्यू का यह अभियान चलाया गया है। मुझे अब तक जो जानकारी मिली है, उसके अनुसार लगभग 1,236 काले हिरणों को पकड़ा गया है, जिन्हें श्योपुर के जंगलों, गांधी सागर और रानी दुर्गावती रिजर्व फॉरेस्ट में छोड़ा जा रहा है।



एमपी बनेगा मॉडल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस काम के लिए 11 टुकों की व्यवस्था की गई है। पशु चिकित्सकों, आवश्यक उपकरणों और पूरी सावधानी के साथ जानवरों को सुरक्षित रूप से ले जाने की यह व्यवस्था वास्तव में अद्भुत है। मुझे विश्वास है कि इस परियोजना की सफलता के आधार पर देश के कई अन्य राज्य और दूसरे देश भी इस पद्धति को अपनाएंगे। मैं अपनी ओर से वन विभाग की पूरी टीम को बधाई देता हूँ। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार बनने के बाद से ही हमने लगातार जनकल्याणकारी कार्यों को तेजी से धरातल पर उतारने का काम किया है। विशेष रूप से किसान कल्याण, युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने तथा प्रकृति और वन्यजीवों के संरक्षण की दिशा में हमने महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

चक्रवात अर्नब: आंध्र प्रदेश और ओडिशा के कई जिलों में अलर्ट, आंधी से उखड़े कई पेड़-खंभे; कमजोर पड़ा तूफान

नई दिल्ली, सांध्यप्रकाश। बंगाल की खाड़ी से उठा चक्रवाती तूफान ‘अर्नब’ मंगलवार देर रात 3:30 बजे आंध्र प्रदेश के तट से टकराया। यहां 125 से 135 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाओं के साथ भारी बारिश हो रही है।

तूफान के कारण 50 ट्रेन और विजयवाड़ा-विशाखापट्टनम एयरपोर्ट पर 21 फ्लाइट्स रद्द की गई हैं। आंध्र प्रदेश और ओडिशा में 4,000 साइकिलों शेल्टर बनाए गए हैं। ओडिशा में भारी बारिश के चलते 16 जिलों में स्कूल बंद हैं। यहां 30 हजार लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया है। आईएमडी ने मलकानगिरी, कोरापुट, नरसिंपुर, रायगड़ा, गजपति और कालाहांडी जिलों में भारी से बेहद भारी बारिश की चेतावनी देते हुए रेड अलर्ट जारी किया है। इन इलाकों में 20 सेंटीमीटर से अधिक बारिश और 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने की आशंका है। ओडिशा में अलर्ट, 30 हजार से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। आंध्र प्रदेश, यानम के तट पर बेहद गंभीर चक्रवाती तूफान अर्नब के लैंडफॉल की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ओडिशा सरकार ने बुधवार को 30 हजार से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है।

सिंहस्थ की पिच पर शतक! ठेकेदारों की गैद, अफसरों का बल्ला और भोपाल में अंपायर!

उज्जैन, सांध्यप्रकाश। निरीक्षण का शतक पूरा हुआ, मंगलवार की तस्वीरें ने बता दिया—अब दोहर शतक की पारी शुरू है! लेकिन सिंहस्थ की पिच ऐसी है कि यहाँ चौका मारने से पहले गद्दा देखना पड़ता है और छक्का मारने से पहले ठेकेदार का चेहरा!

आशीष सिंह और रोशन सिंह विकास की बल्लेबाजी में जुटे हैं। मगर हर गेंद पर बल्ला घुमाया नहीं। अकलमंदी नहीं। आखिर गेंदबाज भी अपने हैं, मैदान भी अपना है और मैच 2028 में जीतना भी है। इसलिए गलत गेंद पर पाँच लाख की चोट तय है। ठेकेदारों को भी समझ आ गया



होगा कि अब काम में सीमेंट कम और बहाने ज्यादा डालने से काम नहीं चलेगा! इधर दोनो बल्लेबाज इस सच से वाकिफ हैं कि कितनी खुफिया आंखें उनके हर कदम पर लगी हुई हैं। इसलिए दोनो इस अशआर से परिचित होंगे। खासकर हर गेंद खेल रहे आशीष सिंह। मैं अपने शहर के लोगों से खूब वाकिफ हूँ। हर एक हाथ का पत्थर मेरी निगाह में है।

यह शेर नहीं, सिंहस्थ की पिच पर खेली जा रही पूरी पारी का ड्रैसिंग रूम वाला सच है! यहाँ पत्थर चलाने वालों की कमी नहीं, बस पत्थर किसके हाथ में है और निशाना किस तरफ है—इसका हिसाब जरूरी है।

इधर भोपाल में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अंपायर की कुर्सी पर हैं। गलत खेल दिखा तो उंगली उठेगी; वहाँ न सिर्फ रीश चलेंगे, न बहाने की अपील!

फिलहाल शतक बन गया है, दोहरा शतक बाकी है। बस ध्यान रहे—2028 में जनता को स्कोरबोर्ड नहीं, सिंहस्थ चाहिए। वरना रन अफसरों के खाते में और विकेट पूरे शहर के सपनों का गिर जाएगा!



राजगढ़ के गुलावता से दिग्विजय सिंह की सत्य सनातन स्वाभिमान यात्रा के नौवें दिन का आगाज

राजगढ़, सांध्यप्रकाश। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की सत्य सनातन स्वाभिमान यात्रा के नौवें दिन की शुरुआत बुधवार को राजगढ़ जिले के ग्राम गुलावता स्थित श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना के साथ हुई। मंदिर में प्रभु के दर्शन कर आशीर्वाद लेने के बाद यात्रा आगे बढ़ी।

यात्रा के दौरान धर्मरथ में विराजमान प्रभु श्रीरामलला सरकार, पवित्र तीर्थों के जल से सुशोभित कलशों और पार्थिव शिवलिंग का विधिवत पूजन-अर्चना किया गया। आरती के बाद राष्ट्रध्वज तिरंगे को ससम्मान सलामी अर्पित की



गई और पदयात्रा का अगला चरण शुरू हुआ। यात्रा से जुड़े आयोजकों के अनुसार, सत्य सनातन स्वाभिमान यात्रा का उद्देश्य सनातन परंपरा के प्रति आस्था और स्वाभिमान का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है। इसके साथ ही धर्म के नाम पर होने वाले कथित पाखंड और भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोगों को जागरूक करने का संकल्प भी यात्रा के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है।

यात्रा से जुड़े संदेश में जनसमर्थन और लोगों के स्नेह को इसकी सबसे बड़ी ताकत बताते हुए सत्य और धर्म के प्रति आस्था को प्रेरणा बताया गया है। आयोजकों ने संकल्प को अडिग रखते हुए यात्रा जारी रखने की प्रतिबद्धता दोहराई। दिग्विजय सिंह की यह यात्रा धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक और वैचारिक संदेश को भी केंद्र में रख रही है।



साँध्यप्रकाश विशेष

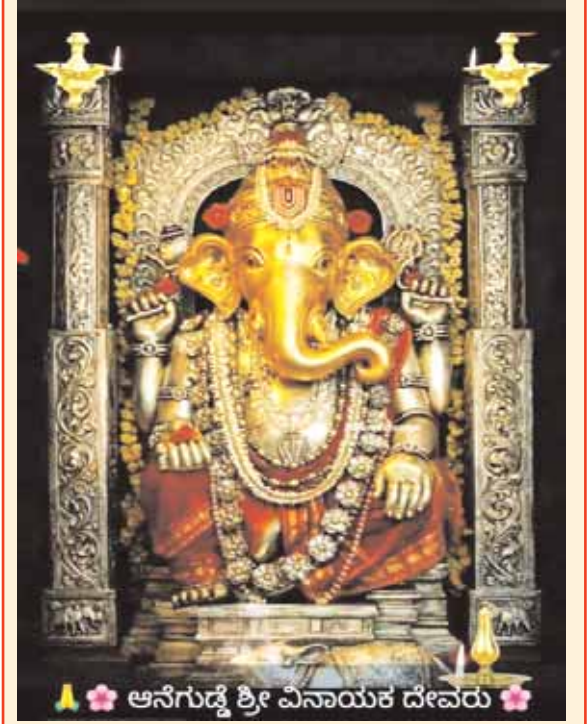


रूपक राव

दिव्य आलिंगन- कर्नाटक के चिकमगलूर जिले के अमृतपुरा स्थित अमृतेश्वर मंदिर में सोपस्टोन (मुलायम पत्थर) पर उकेरी गई यह अद्भुत कलाकृति, 12वीं सदी के होयसल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। लगभग 1196 ईस्वी में राजा वीर बल्लाल द्वितीय के शासनकाल में निर्मित इस मूर्ति में नाग-नागिन के एक दिव्य जोड़े को दर्शाया गया है। इनके शरीर का ऊपरी हिस्सा इंसानी रूप में है, जबकि निचला हिस्सा आपस में पूरी तरह से गुंथा हुआ है, जो एक शाश्वत आलिंगन को दर्शाता है। कई फनों वाले नागों से ढकी यह आकृति पारंपरिक रूप से ब्रह्मांडीय सामंजस्य, उर्वरता और पृथ्वी तथा जल की गहरी सुरक्षात्मक ऊर्जाओं का प्रतीक मानी जाती है।



गारलोड्डु लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर, गारलावोड्डु गांव, खम्मम जिला, तेलंगाना ।



श्री विनायक स्वामी कुंभशी उडुपी जिला कर्नाटक।



सारंगपुर हनुमान मंदिर गुजरात

साक्षात्कार

प्रशिक्षण, शोध, नवाचार और जनभागीदारी से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निरंतर प्रयास वाल्मी निदेशक सरिता बाला ओम प्रजापति

वाल्मी संस्थान जल, जंगल और जमीन के संरक्षण से भविष्य सँवारने की सार्थक पहल

साँध्यप्रकाश विशेष



सुरशील कुमार जैन

प्रकृति की रक्षा, भविष्य की सुरक्षा
प्रकृति केवल हमारे जीवन का आधार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की अमूल्य विरासत भी है। जल, जंगल, जमीन और वायु के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है। ऐसे समय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यावहारिक प्रशिक्षण, जनभागीदारी और प्रभावी प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के ठोस प्रयास आवश्यक हैं।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) इसी दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संस्थान की वर्तमान निदेशक एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी सरिता बाला ओम प्रजापति से हुई बातचीत में संस्थान की कार्यप्रणाली, उपलब्धियों, नवाचारों और भविष्य की चुनौतियों को समझने का अवसर मिला। संवाद से यह स्पष्ट हुआ कि पर्यावरण संरक्षण तभी प्रभावी हो सकता है, जब ज्ञान को व्यवहार से जोड़ा जाए और शासन के प्रयासों के साथ समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

जल एवं भूमि प्रबंधन का प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र

भोपाल में कलियासोत बाँध के निकट लगभग 94 हेक्टेयर क्षेत्र में स्थित वाल्मी संस्थान की स्थापना वर्ष 1984 में हुई थी। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग से संबद्ध यह संस्थान जल एवं भूमि प्रबंधन के क्षेत्र में प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करता है। संस्थान में पंचायत एवं ग्रामीण विकास के साथ सिंचाई, जल संसाधन, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास तथा अन्य विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाता है। लगभग 120 प्रशिक्षणार्थियों के ठहरने की व्यवस्था के कारण यहाँ आवासीय प्रशिक्षण भी आयोजित किए जा सकते हैं।

संस्थान की विशेषता यह है कि प्रशिक्षण केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अधिकारियों और कर्मचारियों को वास्तविक परिस्थितियों में समस्याओं का समाधान करने के लिए सक्षम बनाने पर जोर दिया जाता है।

प्रशिक्षण के साथ व्यावहारिक अनुभव

जल एवं भूमि प्रबंधन जैसे विषयों को केवल कक्षा में समझना पर्याप्त नहीं है। वर्षाजल संचयन, रोक बाँध का निर्माण, मिट्टी का कटाव रोकना और ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग जैसे कार्यों को देखकर अधिक प्रभावी ढंग से सीखा जा सकता है। इसी उद्देश्य से वाल्मी संस्थान अध्ययन भ्रमण और व्यावहारिक

अनुभव यात्राएँ भी आयोजित करता है। जल संसाधन विभाग के अभियंताओं को बाँध, रोक बाँध और अन्य जल संरचनाओं से संबंधित व्यावहारिक जानकारी दी जाती है। प्रशिक्षण के उद्देश्य के अनुसार ऐसी ग्राम पंचायतों का भ्रमण भी कराया जाता है, जहाँ जल प्रबंधन और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुए हों।

महाराष्ट्र में सफल ग्रामीण विकास एवं जल संरक्षण के प्रयोगों से प्रशिक्षणार्थियों को परिचित कराने के प्रयास भी इसी दृष्टिकोण का हिस्सा हैं। ऐसे अनुभव एक क्षेत्र में अपनाए गए सफल प्रयोगों को दूसरे क्षेत्रों तक पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं।

जल संकट का समाधान जनभागीदारी में

आज भूजल स्तर में गिरावट, जल स्रोतों के सूखने और वर्षाजल के अपर्याप्त संचयन की समस्या अनेक क्षेत्रों में दिखाई देती है। ऐसे में जल संरक्षण को केवल सरकारी कार्यक्रम न मानकर सामाजिक जिम्मेदारी बनाना आवश्यक है। निदेशक सरिता बाला ओम प्रजापति के अनुसार, वाल्मी संस्थान जल संरक्षण, पानी के विवेकपूर्ण उपयोग, पुनर्चक्रण और जल प्रदूषण की रोकथाम जैसे विषयों पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता के माध्यम से कार्य करता है।

अटल भूजल योजना के अंतर्गत संस्थान विभिन्न जिलों में पंचायत स्तर पर प्रशिक्षण के माध्यम से जल प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाने में योगदान दे रहा है। इसका उद्देश्य पंचायत प्रतिनिधियों और ग्रामीण समुदायों को अपने क्षेत्र के जल संसाधनों का आकलन करने, पानी के दुरुपयोग को रोकने और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संरक्षण के उपाय अपनाने के लिए प्रेरित करना है।

नल-जल योजना और वर्षाजल संचयन

हर घर तक नल से जल पहुँचाना महत्वपूर्ण सामाजिक आवश्यकता है। लेकिन जलापूर्ति की व्यवस्था बनाते समय स्थानीय जल स्रोतों, भूजल की उपलब्धता और भविष्य की आवश्यकताओं का वैज्ञानिक आकलन भी जरूरी है।

बातचीत में जल जीवन मिशन के अंतर्गत जलापूर्ति की व्यवस्था तथा कुछ स्थानों पर जलाशय उपलब्ध होने के बावजूद नलकूपों से पानी उपलब्ध कराने जैसे विषयों पर चर्चा हुई। इस संदर्भ में सतही जल और भूजल के संतुलित उपयोग की आवश्यकता सामने आती है।

संस्थान जल जीवन मिशन से जुड़े विषयों पर विशेषज्ञों के माध्यम से परामर्श और प्रतिवेदन तैयार करने में भी सहयोग कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) के साथ परियोजना संबंधी कार्यों तथा जल प्रबंधन के मूल्यांकन और सुधार के प्रयासों का भी उल्लेख हुआ। वर्षाजल संचयन की दिशा में संस्थान में प्रदर्शन व्यवस्था उपलब्ध है। प्रशिक्षणार्थियों को छतों से वर्षाजल एकत्र करने और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप जल संरक्षण की संरचनाएँ विकसित करने की जानकारी दी जाती है।



मियावाकी पद्धति से हरियाली का विस्तार

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में जापान की मियावाकी पद्धति का विशेष महत्व है। इसमें स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल विभिन्न प्रजातियों के पौधों को सघन रूप से लगाकर सीमित क्षेत्र में घना हरित क्षेत्र विकसित किया जाता है।

वाल्मी संस्थान ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के कुछ पथकर केंद्रों सहित विभिन्न स्थानों पर इस पद्धति से पौधारोपण संबंधी कार्य किए हैं। बातचीत में



मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग परिसर और वल्लभ भवन के एक क्षेत्र में भी इस पद्धति से पौधारोपण का उल्लेख हुआ।

जैव विविधता और बदलती जलवायु की चुनौती

वाल्मी संस्थान का प्राकृतिक परिसर भी पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बातचीत में परिसर में लगभग 173 प्रकार की जैव विविधता संबंधी प्रजातियों की उपस्थिति और जैव विविधता के क्षेत्र में मिली पहचान का उल्लेख किया गया। इस संबंध में आधिकारिक घोषणा और प्रजातियों के वर्गीकरण की पुष्टि संबंधित अभिलेखों से की जानी चाहिए।

संस्थान में अनार, शहतूत, अँवला, इमली, आम और अमरूद जैसे फलदार वृक्षों के साथ औषधीय पौधों को विकसित करने के प्रयास भी किए गए हैं। ऐसे हरित क्षेत्र पर्यावरणीय शिक्षा, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जैव विविधता के महत्व को समझने में सहायक होते हैं।

बातचीत के दौरान मध्य प्रदेश के लिए वर्ष 2050 तक जलवायु संबंधी संभावित परिवर्तनों और जल संरक्षण की आवश्यकताओं के आकलन से संबंधित राज्य-विशिष्ट योजना का भी उल्लेख हुआ। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव वर्षा, तापमान, कृषि और जल उपलब्धता पर पड़ सकता है।

(आईएसओ) के प्रमाणन का भी उल्लेख हुआ। इन उपलब्धियों का महत्व इस बात में है कि संस्थान पर्यावरण संरक्षण के साथ अपनी आंतरिक व्यवस्थाओं, प्रशिक्षण सुविधाओं और भोजन की गुणवत्ता पर भी ध्यान दे रहा है। किसी संस्थान की वास्तविक सफलता निरंतर सुधार, पारदर्शिता, विशेषज्ञता और समाज के लिए उपयोगी परिणामों से निर्धारित होती है।

युवाओं और समाज की भागीदारी से सुरक्षित होगा भविष्य

आज युवाओं के पास विज्ञान, तकनीक और नवाचार के माध्यम से पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान खोजने की व्यापक संभावनाएँ हैं। जल संरक्षण, प्राकृतिक खेती, वर्षाजल संचयन, अपशिष्ट प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण जैसे विषयों से युवाओं को जोड़ना समय की आवश्यकता है।

वाल्मी संस्थान महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को शोध के अवसर उपलब्ध कराने तथा विभिन्न विभागों के साथ प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दे रहा है। शैक्षणिक संस्थानों, स्वयंसेवी संगठनों, पंचायतों, किसानों और स्थानीय समुदायों के बीच साझेदारी इस दिशा में और प्रभावी साबित हो सकती है। इसके साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामों का मूल्यांकन भी आवश्यक है। कितनी जल संरचनाएँ उपयोगी बनीं, कितना वर्षाजल संचित हुआ, कितने पौधे जीवित रहे और कितनी पंचायतों ने जल प्रबंधन की योजनाएँ अपनाईं—ऐसे संकेतक संस्थान के कार्यों के वास्तविक प्रभाव को सामने ला सकते हैं।

जल है तो कल है, प्रकृति है तो जीवन है

वाल्मी संस्थान की गतिविधियों और निदेशक सरिता बाला ओम प्रजापति के साथ हुए संवाद से यह संदेश सामने आता है कि पर्यावरण संरक्षण किसी एक विभाग, अधिकारी या संगठन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि शासन, समाज और प्रत्येक नागरिक का साझा दायित्व है।

जल संरक्षण, भूमि प्रबंधन, वर्षाजल संचयन, मियावाकी पद्धति, जैव विविधता, शोध और प्रशिक्षण के प्रयास तभी सार्थक होंगे, जब उनका लाभ धरातल पर दिखाई दे और लोग उन्हें अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ। विकास का वास्तविक अर्थ केवल बड़ी इमारतें, चौड़ी सड़कें और आधुनिक सुविधाएँ नहीं हैं। वास्तविक विकास वह है, जिसमें जल स्रोत जीवित रहें, मिट्टी की उर्वरता बनी रहे, हरियाली का विस्तार हो और आने वाली पीढ़ियों को जीवन के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हों।

जल है तो कल है। भूमि सुरक्षित है तो जीवन सुरक्षित है। हरियाली बचेगी तो जैव विविधता बचेगी। प्रकृति सुरक्षित रहेगी, तभी मानव सभ्यता का भविष्य सुरक्षित रह सकेगा। यही पर्यावरण संरक्षण का मूल संदेश और हमारी सामूहिक जिम्मेदारी का संकल्प है।

चंद्रशेखर तिवारी पर कालिख पोतने की घटना पर मुकेश जोशी का बयान, बोले- हिंदू समाज को जागरुक होने की जरूरत



एकजुट नहीं हुआ, ता भविष्य म गभार पारंस्थायता पदा हो सकती हैं। उन्होंने हिंदू समाज से आपसी मतभेद भुलाकर एकता बनाए रखने की अपील की। इस अवसर पर रामफूल कोर, यशवंत योगी, अनमोल पाटीदार और ओम प्रकाश राजपूत सहित संगठन के बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित रहे।

भोपाल, साँध्यप्रकाश। विश्व हिंदू महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष मुकेश जोशी ने हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी पर भरे बाजार में कुछ लोगों द्वारा घेरा बनाकर कालिख पोतने की घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि इस घटना से ऐसा लगता है कि वास्तव में हिंदू खतरे में हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ ताकतें हिंदुओं को आपस में लड़कर प्रदेश और देश पर राज करना चाहती हैं। मुकेश जोशी ने कहा कि हिंदू समाज को अब जागरूक और एकजुट होने की आवश्यकता है। उन्होंने कश्मीर में हिंदुओं के पलायन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज को इतिहास से सबक लेना चाहिए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हिंदू समाज समय रहते नहीं जागा और एकजुट नहीं हुआ, तो भविष्य म गभार पारंस्थायता पदा हो सकती हैं। उन्होंने हिंदू समाज से आपसी मतभेद भुलाकर एकता बनाए रखने की अपील की। इस अवसर पर रामफूल कोर, यशवंत योगी, अनमोल पाटीदार और ओम प्रकाश राजपूत सहित संगठन के बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित रहे।



कवि ऋतुराज सुधीर, मीरा, सोमदत्त परमल, फल, विहारी, सुब्रह्मण्य भारती हिंदीसेवी सम्मान, परिचार सम्मान से सम्मानित हैं। मैं आंगिरस, एक मरणधर्मा और अन्य, किन्ना थोड़ा वज्रत, पुल पर पानी, अवेकस, नहीं प्रबोधचंद्रोदय, सुस्त निस्त, लीला मुखारविंद।



नवरो में जंगल हैं, पेड़ नहीं हैं, नवरो में नदियाँ हैं, पानी नहीं है, नवरो में पहाड़ हैं, पत्थर नहीं है, नवरो में देश हैं, लोग नहीं हैं, रमस ही गए हमें जंगल के हम तुम एक नवरो में रहते हैं।

साहित्य, संगीत, शिक्षा खेल और चित्रकला में उत्कृष्ट योगदान देने वाली विप्र महिलाएं सम्मानित



भोपाल, साँध्यप्रकाश। अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष सावित्री तिवारी के निर्देशन में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें साहित्य, संगीत, शिक्षा, खेल, चित्रकला और नृत्य कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाली विप्र नारियों को शाल, श्रीफल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

साहित्य के क्षेत्र में डॉ. वंदना मिश्रा, शिक्षा में आरती दुबे, संगीत एवं नृत्य कला में दीपिका दुबे, खेल जगत में शिक्षिका मोहिनी चतुर्वेदी तथा चित्रकला के क्षेत्र में डॉ. यशस्विनी मिश्रा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बाल प्रतिभाओं कृति, सृष्टि, अनाया, आन्या, अधोरा, अमायरा और जागृति शर्मा को नृत्य कला के लिए सम्मान मिला। वहीं नमन पर्व और शिवाय शर्मा को अभिनय तथा संजना और रजनो को नृत्य कला के क्षेत्र में सम्मानित किया गया। समारोह में बड़ी संख्या में महिला शक्ति और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। आयोजन का उद्देश्य प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को सम्मान देना रहा। अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष सावित्री तिवारी के निर्देशन में प्रत्येक जिलों में एक से अधिक कार्यक्रम होते रहते हैं उन्हें अपनी मध्य प्रदेश की समस्त कार्यकारिणी पर गर्व है।

नित्य ब्रह्म मुहूर्त में उठें



हमारे शास्त्र कहते हैं कि %नित्य ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए तथा धर्म, अर्थ का चिंतन करना चाहिए। वास्तव में यह चिंतन ही जीवन से संवाद है। कहते हैं कि मनुष्य को दिनभर किए गए कार्यों की समीक्षा रात्रि में अवश्य करनी चाहिए और प्रातः-काल उठते ही प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि आज मुझसे कोई ऐसा कार्य न हो जिससे किसी के हृदय को ठेस पहुंचे अथवा किसी का अमंगल हो।

वस्तुतः यही आत्मिक और सामाजिक कल्याण का मार्ग है। आज का दिन शुभ मंगलमय हो।

स म्पादकीय

परिवारों पर बढ़ता कर्ज का साया

वित्तीय संपत्तियां बढ़ने के बावजूद शुद्ध बचत में गिरावट और उधारी में तेज उछाल केवल आंकड़ों का उतार-चढ़ाव नहीं है। यह सवाल भी है कि भारतीय परिवार अपनी कमाई का कितना हिस्सा भविष्य के लिए बचा पा रहे हैं और कितना कर्ज चुकाने में खर्च हो रहा है? सवाल यह भी उठता है कि क्या भारतीय परिवार कर्ज में ही जीवन गुजारने को विवश हैं?

असल में, भारतीय समाज में बचत केवल पैसे जमा करने की आदत नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा का सबसे मजबूत आधार रही है। बीमारी हो, बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदने का सपना या नौकरी और कारोबार में अनिश्चितता-परिवारों की जमा पूंजी मुश्किल समय में सहारा देती रही है। भारतीय मध्यवर्ग की आर्थिक सोच भी इसी विश्वास पर टिकी रही है कि आज थोड़ी बचत कर ली जाए, तो कल की परेशानियों का सामना अधिक मजबूती से किया जा सकेगा। लेकिन अब देश के परिवारों की वित्तीय स्थिति से जुड़े आंकड़े एक ऐसी तस्वीर सामने रख रहे हैं, जिस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। परिवारों की वित्तीय संपत्तियां बढ़ रही हैं, मगर कर्ज उससे कहीं तेज गति से बढ़ रहा है। नतीजा यह कि शुद्ध वित्तीय बचत घट रही है।

आंकड़ों की बात करें तो वित्त वर्ष 2025-26 में परिवारों की शुद्ध वित्तीय बचत 22.57 लाख करोड़ रुपये से घटकर 21.69 लाख करोड़ रुपये रह गई। यानी एक साल में करीब 88 हजार करोड़ रुपये की कमी। दूसरी ओर, परिवारों की वित्तीय संपत्तियों में 43.20 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई, लेकिन नई वित्तीय देनदारियां भी 21.51 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गईं। वित्तीय संपत्तियों में बढ़ोतरी की दर 12.8 प्रतिशत रही, जबकि कर्ज में वृद्धि 36.7 प्रतिशत पैदा की गई। यही इस पूरी तस्वीर का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है—परिवार पैसा जमा तो कर रहे हैं, लेकिन उनकी उधारी उससे कहीं तेजी से बढ़ रही है।

इन आंकड़ों को केवल इस नजरिये से देखना पर्याप्त नहीं होगा कि भारतीय परिवार पहले से ज्यादा कर्ज ले रहे हैं। असली सवाल यह है कि इस बढ़ते कर्ज की वजह क्या है? क्या परिवार अपनी आय और जीवन स्तर में सुधार के लिए कर्ज ले रहे हैं, या महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रोजगार के खर्चों के बीच उनकी कमाई कम पड़ने लगी है?

इन दोनों परिस्थितियों के आर्थिक अर्थ बिल्कुल अलग हैं। यदि परिवार घर, वाहन या किसी ऐसी संपत्ति के लिए कर्ज ले रहे हैं, जिससे भविष्य में आर्थिक सुरक्षा बढ़ सकती है, तो उधारी हमेशा चिंता का विषय नहीं होती। लेकिन यदि कर्ज का सहारा नियमित घरेलू खर्च चलाने के लिए लेना पड़ रहा है, तो यह आर्थिक दबाव का संकेत हो सकता है। और कहीं न कहीं ऐसा हो रहा है और पचास प्रतिशत से अधिक परिवारों में हो रहा है।

वित्त वर्ष 2024-25 में परिवारों की वित्तीय संपत्तियों में हर 100 रुपये की बढ़ोतरी के मुकाबले लगभग 41 रुपये का नया कर्ज जुड़ा था। 2025-26 में यह अनुपात बढ़कर 100 रुपये हो गया। जीडीपी के अनुपात में शुद्ध वित्तीय बचत 7.1 प्रतिशत से घटकर 6.3 प्रतिशत रह गई, जबकि नई वित्तीय देनदारियों का अनुपात 4.9 प्रतिशत से बढ़कर 6.2 प्रतिशत हो गया। ये आंकड़े गवाह हैं कि परिवारों की वित्तीय स्थिति में कर्ज की भूमिका बढ़ रही है। शुद्ध वित्तीय बचत का गिरना इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही बचत परिवारों की भविष्य की जरूरतों और अप्रत्याशित संकटों से निपटने की क्षमता का एक अहम संकेतक है।

हालाँकि, बचत में गिरावट का अर्थ यह नहीं कि हर परिवार गरीब हो रहा है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर यह रुझान बताता है कि परिवारों की वित्तीय संपत्तियों में वृद्धि का एक बड़ा हिस्सा बढ़ती उधारी के साथ जुड़ा हुआ है। परिवारों ने बैंक और गैर-बैंक जमा में 15.2 लाख करोड़ रुपये जोड़े। छोटी बचत योजनाओं में भी निवेश बढ़ा। इसके बावजूद शुद्ध वित्तीय बचत में गिरावट दर्ज हुई। यह विरोधाभास नहीं, बल्कि घरेलू वित्त की बदलती तस्वीर है। परिवारों की जमा और निवेश बढ़ सकते हैं, लेकिन यदि उसी समय उनके कर्ज में उससे अधिक तेजी से वृद्धि हो, तो शुद्ध बचत पर दबाव पड़ सकता है।

यहीं नीति निर्माताओं के सामने एक महत्वपूर्ण सवाल है। क्या देश की आर्थिक प्रगति का लाभ इस तरह आम परिवारों तक पहुंच रहा है कि उनकी बचत करने की क्षमता भी मजबूत हो? आर्थिक विकास का वास्तविक लाभ केवल अधिक वस्तुओं की खरीद, बढ़ते उपभोग या कर्ज लेकर संपत्तियां हासिल करने में नहीं है। उसका एक महत्वपूर्ण पैमाना यह भी है कि परिवार अपनी नियमित आय से खर्च चलाने के बाद भविष्य के लिए कितनी रकम सुरक्षित रख पा रहे हैं।

बैंक जमा में वृद्धि निश्चित रूप से सकारात्मक पहलू है। लेकिन घरेलू वित्तीय मजबूती का आकलन केवल जमा की राशि देखकर नहीं किया जा सकता। इसके लिए यह भी देखना होगा कि कितने परिवारों के पास आपात स्थिति में खर्च चलाने के लिए पर्याप्त बचत है और कितने परिवार अपनी मासिक आय का बड़ा हिस्सा कर्जों की किस्तों और ब्याज के भुगतान में खर्च कर रहे हैं। वित्तीय आंकड़ों में एक और महत्वपूर्ण बदलाव सीधे शेयरों में निवेश को लेकर दिखाई देता है। पिछले वित्त वर्ष में परिवारों ने सीधे शेयरों में शुद्ध 40,353 करोड़ रुपये लगाए थे, जबकि 2025-26 में उन्होंने शुद्ध रूप से 79,890 करोड़ रुपये के शेयर निकाले।

परिवारों के बैंक कर्ज में एक साल के भीतर 12.35 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 16.17 लाख करोड़ रुपये की नई देनदारियां जुड़ीं। वहीं, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों से नया कर्ज 2.52 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 4.85 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। एनबीएफसी से उधारी में लगभग दोगुनी वृद्धि बताती है कि घरेलू ऋण बाजार के इस हिस्से पर भी गंभीरता से नजर रखने की जरूरत है।

कर्ज की उपलब्धता बढ़ना आर्थिक गतिविधियों के लिए उपयोगी हो सकता है। घर, वाहन, शिक्षा और कारोबार के लिए ऋण परिवारों के अवसर बढ़ा सकता है। लेकिन आसान कर्ज और टिकाऊ कर्ज में फर्क होता है। यदि ऋण लेने वाले की आय स्थिर है और किस्त चुकाने की क्षमता पर्याप्त है, तो कर्ज विकास का साधन बन सकता है। इसके उलट, यदि आय में अनिश्चितता है और ब्याज तथा किस्तों का बोझ बढ़ रहा है, तो वही कर्ज परिवार की आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित कर सकता है।

भारत की अर्थव्यवस्था के लिए घरेलू बचत का महत्व केवल परिवारों तक सीमित नहीं है। घरेलू बचत वित्तीय व्यवस्था को संसाधन उपलब्ध कराती है, जिससे निवेश और दीर्घकालिक आर्थिक विकास को सहारा मिलता है। यदि परिवारों की शुद्ध वित्तीय बचत लगातार दबाव में रहती है, तो इसका व्यापक आर्थिक असर भी हो सकता है।

वरिष्ठ पत्रकार राजू मिश्र से एक मुलाकात, जिसने पत्रकारिता को देखने का नज़रिया और गहरा किया



ये जानना बेहद जरूरी है कि मुंबई प्रेस क्लब के प्रतिष्ठित रेड इंक अवॉर्ड पर सालों तक अंग्रेजी मीडिया का दबदबा रहा था। हिंदी के बड़े-बड़े नामांकन जाते थे, पर राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतिस्पर्धा में जीत अक्सर अंग्रेजी के खाते में ही जाती थी। इस परंपरा को तोड़ राजू मिश्र जी ने। साल 2017 में बुंदेलखंड के भीषण सूखे पर उनकी 8-भाग की जमीनी खोजी रिपोर्ट ने %व्यावरण% कैटेगरी में जीत हासिल की और वे हिंदी प्रिंट मीडिया के पहले पत्रकार बने जिन्हें ये सम्मान मिला। ये सम्मान उन्हें तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस के हाथों मिला।

पत्रकारिता मेरे लिए केवल एक पेशा नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही एक विरासत है। मेरे परदादाजी पालीवाल ब्राह्मण समाज इंदौर के प्रथम पत्रकार स्वर्गीय गणेशचन्द्रजी पुरोहित और मेरे परिवार की पत्रकारिता से जुड़ी यात्रा ने बचपन से ही मुझे समाचारों, समाज और सार्वजनिक जीवन को करीब से देखने की प्रेरणा दी है। आज, जब मैं स्वयं पत्रकारिता के साथ पॉलिटिकल कैरिलिंग के क्षेत्र में सक्रिय हूँ, तब किसी ऐसे पत्रकार से मिलना, जिसने दशकों तक समाचार कक्ष से लेकर समाज के सबसे कठिन सवालों तक अपनी कलम चलाई हो, मेरे लिए विशेष महत्व रखता है।

लखनऊ के मोहाना रोड़ स्थित टिकैत राय सचिवालय कॉलोनी में उनके निवास पर हुई इस मुलाकात में मेरे साथ मेरे सहकर्मी सौरभ सुमन उपाध्याय (रूहड़इंडस्ट्रिज़ थ्रुलूइडइ4इ4) भी मौजूद थे। बात पत्रकारिता से शुरू हुई, बुंदेलखंड के सूखे तक पहुंची, आगामी चुनावी राजनीति के भीतर उतरी और अंततः उस सवाल पर आकर ठहर गई, जो शायद हर पत्रकार को समय-समय पर स्वयं से पूटना चाहिए कि आखिर कलम की असली ताकत क्या है ? राजू मिश्रजी के अनुभवों ने इस सवाल के कई जवाब दिए।

समाचारों के पीछे छिपी सच्चाई को

खोजने वाला पत्रकार

दैनिक जागरण, लखनऊ में करीब चार दशक तक ईमानदारी से सेवाएं देने वाले राजू मिश्रजी का अनुभव केवल समाचारों को पढ़ने, लिखने या संपादित करने तक सीमित नहीं है। उनका काम वह पत्रकारिता है, जिसमें किसी घटना की सूचना मिल जाना अंतिम उपलब्धि नहीं होता, अंतितु उसके पीछे छिे कारणों और वास्तविक परिस्थितियों को समझना असली काम होता है। आज पत्रकारिता के सामने एक बड़ी चुनौती यह है कि खबरें तेजी से पहुंचाने की होड़ में कई बार यह सवाल पीछे छूट जाता है कि खबर के पीछे का सच क्या है। किसी योजना की घोषणा हो, किसी अधिकारी का दावा हो या किसी नेता का बयान इनमें से कोई भी अपने आप में पूरी कहानी नहीं है। पूरी कहानी तब सामने आती है, जब फील्ड में व्यक्ति उतरता है, प्रभावित लोगों से बात करता है और सरकारी दावों की वास्तविकता की जाँच करता है।

राजू मिश्रजी के अनुभव सुनते हुए बार-बार यही महसूस हुआ कि पत्रकारिता की असली पहचान उसकी भाषा की चमक या खबर की सुखी से नहीं, बल्कि उसकी पड़ताल की गहराई से बनती है।

वया पत्रकारिता केवल डिग्री से सीखी जा सकती है ?

पत्रकारिता की पढ़ाई और उसके व्यवहारिक अनुभव के बीच संबंध पर के विचारों का सार यह था कि पत्रकारिता की वास्तविक समझ मैदान में उतरने, लोगों से मिलने और घटनाओं को अपनी आँखों से देखने से विकसित होती है।

क्लासरूम में हम समाचार लेखन के नियम सीख सकते हैं। किताबें पत्रकारिता के सिद्धांत समझा सकती हैं। विश्वविद्यालय हमें मीडिया, राजनीति, समाज और संचार

कलम की खुदारी, ज़मीन की सच्चाई और बेखौफ़ पत्रकारिता

वरिष्ठ पत्रकार राजू मिश्र से एक मुलाकात, जिसने पत्रकारिता को देखने का नज़रिया और गहरा किया



की प्रक्रियाओं का अध्ययन करने का अवसर दे सकता है। लेकिन जब किसी गाँव में कोई व्यक्ति अपनी समस्या बताते हुए व्यवस्था की कमियों को सामने रखता है, जब किसी सरकारी दावे की वास्तविक पड़ताल करनी होती है या जब किसी राजनेता के बयान और उसके क्षेत्र की परिस्थितियों में अंतर दिखाई देता है, तब व्यावहारिक अनुभव की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

मिश्रजी ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन के अनुभवों के माध्यम से यह भी समझाया कि पत्रकारिता में आगे बढ़ने का रास्ता हमेशा आसान नहीं होता। कम उम्र से ही अपने खर्चों के लिए स्वयं प्रयास कर, अध्ययन करना और अपने दम पर आगे बढ़ना व्यक्ति को जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। उनके जीवन का यह पक्ष बताता है कि पत्रकारिता केवल लिखने की कला नहीं, बल्कि जीवन को समझने और विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी जिम्मेदारी निभाने का अभ्यास है। मेरे लिए इस बातचीत की सीख यह नहीं थी कि पत्रकारिता की पढ़ाई महत्वहीन है, बल्कि यह थी कि डिग्री पत्रकारिता का आधार बन सकती है, लेकिन पत्रकार की पहचान उसके अनुभव, सवाल पूछने की क्षमता और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता से बनती है।

पत्रकार की सबसे बड़ी पूँजी खुदारी

इस पूरी बातचीत में पत्रकारिता की स्वतंत्रता और व्यक्ति के स्वाभिमान का सवाल सबसे गहराई से मन में उतरा। एक पत्रकार के सामने कई तरह के आकर्षण आते हैं। सत्ता के गलियारों तक पहुँच, प्रभावशाली लोगों से परिचय, सुविधाएँ, प्रशंसा और कभी-कभी दबाव भी। ऐसे में यह तय करना आसान नहीं होता कि किस परिस्थिति में समझौता करे और किस परिस्थिति में अपने सिद्धांतों पर अडिग रहना है।

मिश्रजी के अनुभवों से जो बात उभरकर सामने आई, वह यह थी कि पत्रकार की असली पूँजी उसका आत्मसंतोष, स्वाभिमान, ईमानदारी और खुदरा स्वभाव है।

दिनभर की मेहनत के बाद रात को चैन की नींद सो पाना एक साधारण बात लग सकती है, लेकिन उस व्यक्ति के लिए इसका अर्थ बहुत बड़ा है, जिसने अपनी कलम को किसी के दबाव में झुकने नहीं दिया।

हर व्यक्ति से सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी राजनीतिक दल, सरकार या नेता के पक्ष में कहीं गई हर बात को स्वीकार करना भी पत्रकारिता नहीं है। पत्रकार का दायित्व है कि वह अपने सामने मौजूद तथ्यों की जाँच करे, अलग-अलग पक्षों को सुने और जो सच सामने आए, उसे जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत करे। निष्पक्षता का अर्थ यह नहीं कि पत्रकार के पास कोई दृष्टिकोण ही न हो। इसका अर्थ है कि उसका दृष्टिकोण तथ्यों को दबाने या बदलने का कारण न बने। यही वह बारीक अंतर है, जो पत्रकारिता को पीआर से अलग करता है।

मीडिया की स्वतंत्रता और आज की

पत्रकारिता

समकालीन मीडिया परिदृश्य पर चर्चा करते हुए यह प्रश्न भी सामने आया कि क्या आज की पत्रकारिता अपने मूल दायित्वों को पूरी तरह निभा पा रही है। आज समाचारों की गति पहले से कहीं अधिक तेज है। मोबाइल फोन पर कुछ ही क्षणों में देश-दुनिया की खबरें पहुँच जाती हैं। डिजिटल मंचों ने पत्रकारिता के नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन उनके साथ चुनौतियाँ भी आई हैं। तत्काल खबर देने की प्रतिस्पर्धा, टीआरपी और क्लिक की चिंता, राजनीतिक दबाव तथा अधूरी जानकारी के आधार पर राय बनाने की प्रवृत्ति पत्रकारिता के लिए गंभीर सवाल खड़े करती है। ऐसे वातावरण में स्वतंत्र संपादकीय दृष्टिकोण और तथ्यपरक



रिपोर्टिंग का महत्व और बढ़ जाता है। बातचीत के दौरान द इंडियन एक्सप्रेस, द टेलीग्राफ, दैनिक भास्कर और आनंदबाजार पत्रिका जैसे समाचार पत्रों का उल्लेख बेबाक रिपोर्टिंग और संपादकीय स्वतंत्रता के संदर्भ में हुआ। किसी भी मीडिया संस्थान का मूल्यंकन अंततः उसके काम, उसकी रिपोर्टिंग और तथ्यों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के आधार पर होना चाहिए।

मीडिया के क्षेत्र में आ रहे हैं युवाओं के लिए इसका अर्थ साफ है किसी खबर को केवल इसलिए सही नहीं मान लेना चाहिए कि वह किसी बड़े संस्थान में प्रकाशित हुई है। उसी तरह किसी खबर को केवल इसलिए खारिज भी नहीं करना चाहिए कि वह किसी छोटे मंच से आई है। तथ्य, प्रमाण और विश्वसनीयता ही पत्रकारिता की कसौटी होने चाहिए। डिजिटल युग में पत्रकारिता के साधन बदल सकते हैं, लेकिन उसके मूल सवाल नहीं बदलने चाहिए।

चुनाव केवल नारों से नहीं जीते जाते

राजनीतिक परामर्श और चुनावी शोध के क्षेत्र में काम करते हुए मेरे लिए राजू मिश्रजी के चुनाव संबंधी अनुभव विशेष रूप से उपयोगी रहे। चुनाव को अक्सर बड़े नेताओं की सभाओं, राजनीतिक नारों, सोशल मीडिया अभियानों और प्रचार के आधार पर समझने की कोशिश की जाती है। लेकिन चुनावी राजनीति की वास्तविक तस्वीर इससे कहीं अधिक जटिल होती है। किसी विधानसभा क्षेत्र में मतदाता क्या सोच रहा है...? स्थानीय विधायक के प्रति उसका अनुभव कैसा है...? क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं...? उम्मीदवार लोगों के बीच कितना स्वीकार्य है...? सामाजिक एवं जातीय समीकरण क्या कहता है...? पार्टी के स्थानीय नेताओं के बीच तालमेल है या गुटबाजी...? वृ्ध स्तर पर संगठन कितना मजबूत है...?

इन सवालों के जवाब चुनावी राजनीति को समझने के लिए जरूरी हैं कि कोई प्रत्याशी क्यों जीता, उसके प्रतिद्वंद्वी से उसे क्या लाभ मिला, स्थानीय सामाजिक समीकरणों की क्या भूमिका रही और चुनाव के बाद क्षेत्र में लोगों की अपेक्षाएँ किस हद तक पूरी हुईं। इसी तरह किसी सीट पर पिछली हार को भविष्य की हार का स्थायी प्रमाण नहीं माना जा सकता। स्थानीय नेतृत्व, उम्मीदवार का चयन, संगठन की सक्रियता, गठबंधन, मुद्दे और मतदाताओं का बदलता व्यवहार चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। चुनाव का सही आकलन करने के लिए केवल आँकड़ों को पढ़ना पर्याप्त नहीं है, उन आँकड़ों के पीछे खड़े लोगों की आवाज सुनना भी जरूरी है। एक शोधकर्ता को सर्वेक्षण के निष्कर्षों को वास्तविक परिस्थितियों से मिलाकर देखना चाहिए। बंद कमरे में तैयार किया गया विश्लेषण तभी उपयोगी बनता है, जब उसकी जाँच जमीन पर की जा सके।

गुटबाजी, संगठन और स्थानीय

राजनीति की अनकही कहानी

राजनीतिक दलों के भीतर होने वाली गुटबाजी और आपसी खींचतान भी चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकती है। किसी पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व भले ही एकजुटता का संदेश दे, लेकिन स्थानीय स्तर पर नेताओं के बीच मतभेद हों, कार्यकर्ताओं की उपेक्षा हो या उम्मीदवार के चयन को लेकर संस्तोष हो, तो उसका असर चुनावी अभियान पर पड़ सकता है। इसीलिए चुनावी शोध करते समय केवल पार्टी के आधिकारिक बयान या सार्वजनिक सभाओं को देखना पर्याप्त नहीं होता। स्थानीय संगठन की वास्तविक स्थिति को समझना भी आवश्यक है।

कौन-सा नेता क्षेत्र में प्रभाव रखता है...? कौन-सा कार्यकर्ता मतदाताओं के बीच सक्रिय है...? पुराने मतभेद कितने गहरे हैं...? क्या स्थानीय नेतृत्व एक उम्मीदवार के

विचार

वरिष्ठ पत्रकार राजू मिश्र से एक मुलाकात, जिसने पत्रकारिता को देखने का नज़रिया और गहरा किया



पीछे एकजुट है...? क्या जनाता की समस्याओं को उठाने वाला कोई प्रभावशाली स्थानीय चेहरा है...? ये ऐसे सवाल हैं, जिनके उत्तर हमेशा प्रेस विज्ञप्तियों में नहीं मिलते। एक अच्छे राजनीतिक शोधकर्ता को तथ्यों के साथ-साथ स्थानीय परिस्थितियों की समझ भी विकसित करनी होती है। हालाँकि, किसी भी निष्कर्षों को केवल सुनी-सुनाई बातों पर आधारित नहीं होना चाहिए। प्रत्यक्ष बातचीत, अनेक स्रोतों से पुष्टि और उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण जरूरी

है। यदि लेखक या पत्रकार केवल किसी शक्तिशाली व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए लिखने लगे, तो उसकी रचना की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। इसके विपरीत, जब लेखन अपने विवेक और सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है, तब वह समय की सीमाओं से आगे जाकर भी महत्त्व बनाए रख सकता है।

पत्रकारिता में यह चुनौती और गंभीर हो जाती है, क्योंकि यहाँ लिखे गए शब्दों का प्रभाव लेखक तक सीमित नहीं रहता। वे सार्वजनिक राय, लोकतांत्रिक विमर्श और सत्ता की जवाबदेही को भी प्रभावित कर सकते हैं। कलम की ताकत इस बात में नहीं है कि वह कितने शक्तिशाली लोगों तक पहुँच सकती है, बल्कि इस बात में है कि वह सच के पक्ष में कितनी मजबूती से खड़ी रह सकती है।

चौथी पीढ़ी के पत्रकार के रूप में मेरी

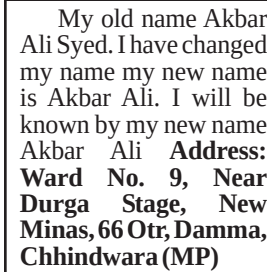
अपनी सीख

राजू मिश्रा से हुई इस मुलाकात को मैं अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक अनुभव के एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखता हूँ। मेरे लिए पत्रकारिता की विरासत का अर्थ केवल अपने पूर्वजों के नाम को आगे बढ़ाना नहीं है। इसका अर्थ उस जिम्मेदारी को समझना भी है, जो समाज की वास्तविकताओं को दर्ज करने और सार्वजनिक जीवन से जुड़े सवाल उठाने के साथ आती है। आज पत्रकारिता का स्वरूप बदल रहा है। समाचार पत्रों के साथ डिजिटल मंच, मोबाइल जर्नालिज्म, वीडियो रिपोर्टिंग, आँकड़ों पर आधारित विश्लेषण और सामाजिक माध्यमों ने नई संभावनाएँ पैदा की हैं। राजनीतिक शोध और परामर्श के क्षेत्र में काम करने से भी मुझे यह समझने का अवसर मिलाता है कि सार्वजनिक मुद्दों, चुनावी व्यवहार और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखना कितना जरूरी है। लेकिन माध्यम चाहे कोई भी हो, कुछ बुनियादी प्रश्न हमेशा बने रहेंगे।

क्या हमने खबर के सभी महत्वपूर्ण पक्षों की जाँच की...? क्या हमने प्रभावित लोगों की बात सुनी...? क्या हमने किसी दावे को पर्याप्त प्रमाण के बिना स्वीकार कर लिया...? क्या हमारा विश्लेषण तथ्यों पर आधारित है...? और सबसे जरूरी, क्या हम अपने पेशे के प्रति ईमानदार हैं...?

इन सवालों को स्वयं से पूछते रहना ही शायद पत्रकारिता में सीखते रहने का सबसे अच्छा तरीका है। राजू मिश्रजी जैसे वरिष्ठ पत्रकारों से संवाद करना केवल उनके अतीत के बारे में जानना नहीं है। यह उस अनुभव से सीखने का अवसर है, जिसे किताबों में पूरी तरह समझना संभव नहीं होता। यह मुलाकात मेरे लिए किसी औपचारिक परिचय या कुछ घंटों की बातचीत से कहीं अधिक रही। इसमें गंभीरता का संघर्ष था, बुंदेलखंड की जमीन से उठते सवाल थे, चुनावी राजनीति की जटिलताएँ थीं और सबसे बढ़कर अपनी कलम के प्रति ईमानदार रहने का संदेश था।

सत्ता के दावों और जनता के अनुभवों के बीच की दूरी को समझना, सरकारी योजनाओं के परिणामों की पड़ताल करना, चुनावी नारों के पीछे की वास्तविकता देखना और समाज के उन लोगों की आवाज को जगह देना, जिनकी बातें अक्सर अनसुनी रह जाती हैं यही पत्रकारिता की सार्थकता है।राजू मिश्रजी के प्रति उनके अनुभवों और विचारों को साझा करने के लिए हार्दिक आभार। ऐसी मुलाकातें यह हमेंसो मजबूत करती हैं कि पत्रकारिता की चुनौतियाँ चाहे कितनी भी बदल जाएँ, ईमानदारी, जमीनी समझ और सवाल पूछने का साहस आज भी इसकी सबसे बड़ी ताकत हैं।



प्रगति का नया परिवेश मध्यप्रदेश



मध्यप्रदेश अर्बन ग्रोथ कॉन्फ्लेव 2.0

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री

28 अक्टूबर 2026 | ब्रिलियंट कन्वेंशन सेन्टर, इंदौर



प्रमुख आकर्षण

- शहरी विकास एवं निवेश-आधारित सत्र
- वन-टू-वन मीटिंग
- प्रारूप नीतियों का विमोचन
- एमओयू हस्तांतरण एवं आशय पत्र जारी
- 'इंदौर इकोनॉमिक रीजन' रिपोर्ट का विमोचन



पैनल चर्चा

- अर्बन प्लानिंग, ट्रांज़िट ओरिएंटेड डेवलपमेंट, ट्रांसफरेबल डेवलपमेंट राइट्स
- डिजिटल रिफॉर्म
- अर्बन फाइनेंस एवं निवेश संभावनाएं
- जलवायु अनुकूलन क्षमता एवं सर्कुलर इकोनॉमी



फोकस सेक्टर

- शहरी अवसंरचना
- आवास एवं टाउनशिप विकास
- मोबिलिटी एवं मेट्रो अवसंरचना
- डिजिटल गवर्नेंस एवं नवाचार
- निवेश एवं भविष्य के शहर

